International Journal of Advanced Research and
Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

मोदी युग में भारतीय विदेश नीति और वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिकाः 2014 से वर्तमान तक

प्रीक्षित
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बी.एम.यू. अस्थल बोहर, रोहतक।
Reg. No. 22-BMU-7533
Email Id:- prixitparashar1997@gmail.com
डॉ. बी. प्रकाश (प्रोफेसर)
शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बी.एम.यू. अस्थल बोहर, रोहतक।

सारांश

वर्ष 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति के स्वरूप में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देता है। इस अवधि में भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय, बहुआयामी, व्यावहारिक और वैश्विक नेतृत्व की ओर उन्मुख हुई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अपनी विदेश नीति को केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित न रखकर क्षेत्रीय सहयोग, वैश्विक साझेदारी और विकासशील देशों के हितों से जोड़ा। "पड़ोसी प्रथम", "एक्ट ईस्ट", "सागर", "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "विश्वबंधु" जैसी अवधारणाओं ने भारत की कूटनीतिक सोच को नई दिशा प्रदान की। इस दौर में भारत ने दक्षिण एशिया, हिंद–प्रशांत क्षेत्र, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और छोटे द्वीपीय देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया। वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत ने स्वयं को विकासशील देशों की आवाज के रूप में प्रस्तुत किया। वर्ष 2023 में जी–20 अध्यक्षता के दौरान भारत ने खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा संकट, ऋण–संकट, जलवायु न्याय, स्वास्थ्य सुरक्षा, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी। अफ्रीकी संघ को जी–20 का स्थायी सदस्य बनवाने में भारत की भूमिका वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। इसी प्रकार "वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट" के माध्यम से भारत ने विकासशील देशों की चिंताओं को अंतरराष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में लाने का प्रयास किया। प्रस्तुत शोध–पत्र 2014 से वर्तमान तक मोदी युग में भारतीय विदेश नीति की बदलती दिशा, प्राथमिकताओं और वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्दः भारतीय विदेश नीति, मोदी युग, वैश्विक दक्षिण, जी–20, दक्षिण–दक्षिण सहयोग, विकास साझेदारी, वसुधैव कुटुम्बकम्

प्रस्तावना

भारतीय विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही शांति, सह–अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता, सामरिक स्वायत्तता, उपनिवेशवाद–विरोध और विकासशील देशों की एकजुटता जैसे मूल सिद्धांतों पर आधारित रही है। भारत ने प्रारंभ से ही किसी शक्ति–गुट का अनुकरण करने के स्थान पर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का प्रयास किया। किंतु वर्ष 2014 के बाद भारतीय

विदेश नीति के स्वरूप में अधिक सक्रियता, स्पष्टता और नेतृत्वकारी दृष्टिकोण दिखाई देता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति केवल राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों और द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने वैश्विक स्तर पर भारत को एक जिम्मेदार, सक्षम और प्रभावशाली शक्ति के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इस काल में भारत ने अमेरिका, रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय देशों तथा खाड़ी देशों के साथ संबंधों को मजबूत किया, साथ ही अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और प्रशांत द्वीपीय देशों के साथ विकास साझेदारी को भी नई दिशा दी।

मोदी सरकार के प्रारंभिक वर्षों में "पड़ोसी प्रथम नीति" को विशेष प्राथमिकता दी गई। इस नीति का उद्देश्य भारत के पड़ोसी देशों के साथ विश्वास, संपर्क, व्यापार, सुरक्षा और विकास सहयोग को बढ़ाना था। इसी प्रकार "एक्ट ईस्ट नीति" के माध्यम से दक्षिण–पूर्व एशिया और हिंद–प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और सामरिक संबंधों को विस्तार दिया गया। भारतीय महासागर क्षेत्र में भारत ने "सागर" अर्थात् "क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास" की अवधारणा को आगे बढ़ाया। यह दृष्टिकोण समुद्री सुरक्षा, क्षमता निर्माण, आपदा सहायता, संपर्क और क्षेत्रीय विकास से जुड़ा है। इस प्रकार मोदी युग में भारतीय विदेश नीति ने पारंपरिक सिद्धांतों को बनाए रखते हुए अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और वैश्विक दक्षिण के हितों से जुड़ा स्वरूप ग्रहण किया।

मोदी युग में भारतीय विदेश नीति का बदलता स्वरूप

वर्ष 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति के स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में भारत की कूटनीति अधिक सक्रिय, नेतृत्व–प्रधान, व्यावहारिक और परिणामोन्मुख बनी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विदेश नीति को केवल सरकारी स्तर की औपचारिक कूटनीति तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसे जन–केन्द्रित स्वरूप भी प्रदान किया गया। प्रवासी भारतीयों से प्रत्यक्ष संवाद, लगातार उच्चस्तरीय विदेश यात्राएँ, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत की स्पष्ट भागीदारी और संकट के समय मानवीय सहायता ने भारत की वैश्विक छवि को सशक्त बनाया। इस दौर में भारत ने स्वयं को केवल दक्षिण एशिया की शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

मोदी युग में भारत ने अपनी पारंपरिक "रणनीतिक स्वायत्तता" को बनाए रखते हुए "बहु–संरेखण" की नीति अपनाई। इसका अभिप्राय यह है कि भारत किसी एक शक्ति–गुट पर निर्भर रहने के बजाय विभिन्न देशों और संगठनों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार सहयोग करता है। भारत ने अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ रक्षा, तकनीक, व्यापार और निवेश के क्षेत्र में संबंध मजबूत किए, वहीं रूस के साथ ऊर्जा और रक्षा सहयोग को भी बनाए रखा। इसके साथ ही भारत ने क्वाड, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन, जी–20 और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर संतुलित और स्वतंत्र भूमिका निभाई। इस काल में आर्थिक कूटनीति भी विदेश नीति का महत्त्वपूर्ण आधार बनी। निवेश, व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, संपर्क परियोजनाएँ, डिजिटल सहयोग और आपूर्ति–श्रृंखला विविधीकरण को विशेष महत्त्व दिया गया। "मेक इन

इंडिया", "डिजिटल इंडिया", "आत्मनिर्भर भारत" और "विकसित भारत" जैसी घरेलू नीतियों को अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों से जोड़कर भारत ने विदेश नीति को विकास और वैश्विक सहयोग का प्रभावी माध्यम बनाया।

वैश्विक दक्षिण की अवधारणा और भारत

"वैश्विक दक्षिण" से आशय सामान्यतः एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और प्रशांत क्षेत्र के उन देशों से है, जो लंबे समय तक औपनिवेशिक शासन, आर्थिक विषमता, विकासीय पिछड़ेपन और वैश्विक शक्ति–संरचना में सीमित प्रतिनिधित्व जैसी समस्याओं से प्रभावित रहे हैं। ये देश आज भी ऋण–संकट, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा असुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी असमानता, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और वैश्विक संस्थाओं में कम भागीदारी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। वैश्विक दक्षिण केवल भौगोलिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह उन देशों की सामूहिक पहचान है जो न्यायपूर्ण, समान और संतुलित विश्व व्यवस्था की मांग करते हैं।

भारत ऐतिहासिक रूप से वैश्विक दक्षिण की आवाज रहा है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन, उपनिवेशवाद–विरोध, दक्षिण–दक्षिण सहयोग और संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विकासशील देशों के हितों का समर्थन किया। भारत ने हमेशा यह विचार रखा कि विश्व व्यवस्था कुछ शक्तिशाली देशों के हितों तक सीमित न होकर सभी देशों की समान भागीदारी पर आधारित होनी चाहिए। मोदी युग में भारत ने इस ऐतिहासिक भूमिका को नए और अधिक सक्रिय रूप में प्रस्तुत किया। अब भारत केवल एक विकासशील देश के रूप में नहीं, बल्कि विकसित और विकासशील देशों के बीच सेतु के रूप में सामने आया है। भारत ने जी–20 अध्यक्षता, वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट, वैक्सीन मैत्री, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, जलवायु न्याय और विकास साझेदारी के माध्यम से वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को अंतरराष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में लाने का प्रयास किया। इस प्रकार भारत की भूमिका वैश्विक दक्षिण में एक प्रतिनिधि, सहयोगी और नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में विकसित हुई है।

जी–20 अध्यक्षता और वैश्विक दक्षिण की आवाज

भारत की जी–20 अध्यक्षता 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक रही और इसका सबसे महत्त्वपूर्ण चरण 9–10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में आयोजित जी–20 शिखर सम्मेलन के रूप में सामने आया। भारत ने अपनी अध्यक्षता का विषय "वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर" रखा, जो भारतीय चिंतन की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा से प्रेरित था। इस विषय के माध्यम से भारत ने यह संदेश दिया कि वर्तमान वैश्विक समस्याएँ किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनका समाधान सामूहिक सहयोग, समावेशी विकास और साझी जिम्मेदारी से ही संभव है। भारत की अध्यक्षता को "पीपुल्स जी–20" के रूप में भी प्रस्तुत किया गया, क्योंकि इसके अंतर्गत देश के अनेक शहरों में 200 से अधिक बैठकें आयोजित की गईं और इसमें बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इससे भारत ने

जी–20 को केवल उच्चस्तरीय कूटनीतिक मंच न बनाकर जनभागीदारी और सांस्कृतिक प्रस्तुति से भी जोड़ा।

भारत की जी–20 अध्यक्षता में वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को विशेष महत्त्व दिया गया। कोविड–19 महामारी, रूस–यूक्रेन युद्ध, ऊर्जा संकट, खाद्य असुरक्षा, ऋण–संकट और जलवायु परिवर्तन ने विकासशील देशों की समस्याओं को और गहरा कर दिया था। ऐसे समय में भारत ने विकासशील देशों की आवाज को जी–20 के केंद्र में लाने का प्रयास किया। भारत ने यह स्पष्ट किया कि वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में निर्णय लेते समय अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और छोटे द्वीपीय देशों की चुनौतियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

भारत की अध्यक्षता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में अफ्रीकी संघ को जी–20 का स्थायी सदस्य बनाना शामिल है। नई दिल्ली नेताओं की घोषणा में अफ्रीकी संघ का स्थायी सदस्य के रूप में स्वागत किया गया और यह माना गया कि इससे वैश्विक चुनौतियों के समाधान में अफ्रीका की भूमिका मजबूत होगी। यह कदम केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि इससे वैश्विक आर्थिक शासन में अफ्रीका को संस्थागत प्रतिनिधित्व मिला। इस निर्णय ने भारत की उस भूमिका को मजबूत किया, जिसमें वह स्वयं को वैश्विक दक्षिण के हितों का प्रतिनिधि मानता है। भारत ने यह दिखाया कि वह विकासशील देशों की समस्याओं को केवल भाषणों में नहीं उठाता, बल्कि वैश्विक संस्थाओं में उनके प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए ठोस पहल भी करता है। इस प्रकार भारत की जी–20 अध्यक्षता वैश्विक दक्षिण की आवाज को अंतरराष्ट्रीय नीति–निर्माण के केंद्र में लाने का महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुई।

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट मोदी युग की भारतीय विदेश नीति की एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य वैश्विक दक्षिण के देशों को एक ऐसा मंच प्रदान करना था, जहाँ वे अपनी समस्याओं, आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को साझा कर सकें। जनवरी 2023 में आयोजित प्रथम वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में 125 देशों ने भाग लिया। विदेश मंत्रालय के अनुसार इसमें लैटिन अमेरिका और कैरेबियन से 29, अफ्रीका से 47, यूरोप से 7, एशिया से 31 और ओशियानिया से 11 देशों की भागीदारी रही।

तालिका 1: *प्रथम वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट, 2023 में क्षेत्रवार भागीदारी*

क्रमांक	क्षेत्र	भाग लेने वाले देशों की संख्या
1	अफ्रीका	47
2	एशिया	31
3	लैटिन अमेरिका और कैरेबियन	29
4	ओशियानिया	11
5	यूरोप	7
कुल	**कुल भागीदारी**	**125**

स्रोतः विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और ओशियानिया जैसे विविध क्षेत्रों की भागीदारी रही। यह भारत की उस कूटनीतिक नीति को दर्शाता है जिसमें भारत वैश्विक दक्षिण को एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय समूह के रूप में संगठित करना चाहता है। इस सम्मेलन के माध्यम से भारत ने विकासशील देशों की समस्याओं को जी–20 और अन्य बहुपक्षीय मंचों तक पहुँचाने का प्रयास किया।

विकास साझेदारी और दक्षिण–दक्षिण सहयोग

वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका केवल कूटनीतिक वक्तव्यों तक सीमित नहीं है। भारत ने विकास साझेदारी, रियायती ऋण, क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और आधारभूत संरचना परियोजनाओं के माध्यम से अनेक देशों को सहयोग दिया है। विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत ने 68 देशों को 300 से अधिक रियायती ऋण–रेखाएँ दी हैं, जिनका कुल मूल्य 32 अरब अमेरिकी डॉलर है। इनके अंतर्गत लगभग 600 परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनमें रेलवे, सड़क, कृषि, उद्योग, अस्पताल, बंदरगाह, आपदा प्रबंधन, जलविद्युत, विद्युत प्रसारण और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

तालिका 2: *भारत की विकास साझेदारीः ऋण–रेखाएँ और क्षेत्रीय वितरण*

क्रमांक	**क्षेत्र / देश**	**ऋण–रेखा / सहयोग का मूल्य**
1	कुल ऋण–रेखाएँ	300 से अधिक
2	कुल मूल्य	32 अरब अमेरिकी डॉलर
3	लाभार्थी देश	68 देश
4	कुल परियोजनाएँ	लगभग 600
5	बांग्लादेश	7.862 अरब अमेरिकी डॉलर
6	नेपाल	1.65 अरब अमेरिकी डॉलर
7	श्रीलंका	2 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक
8	म्यांमार	745 मिलियन अमेरिकी डॉलर
9	मालदीव	1.43 अरब अमेरिकी डॉलर
10	अफ्रीका	196 ऋण–रेखाएँ, 12 अरब अमेरिकी डॉलर, 42 देश
11	लैटिन अमेरिका	811 मिलियन अमेरिकी डॉलर
12	ओशियानिया	155 मिलियन अमेरिकी डॉलर
13	स्वतंत्र राष्ट्रमंडल क्षेत्र	1.84 अरब अमेरिकी डॉलर

स्रोतः विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि भारत की विकास साझेदारी का सबसे बड़ा क्षेत्रीय फोकस पड़ोसी देशों और अफ्रीका पर है। बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार और मालदीव को दी गई ऋण–रेखाएँ "पड़ोसी प्रथम नीति" की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हैं। इसी प्रकार अफ्रीका को 196 ऋण–रेखाओं के माध्यम से 12 अरब अमेरिकी डॉलर का सहयोग भारत की वैश्विक दक्षिण नीति का महत्त्वपूर्ण आधार है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत वैश्विक दक्षिण में केवल राजनीतिक समर्थन नहीं देता, बल्कि आधारभूत संरचना और विकास परियोजनाओं के माध्यम से व्यावहारिक सहयोग भी प्रदान करता है।

वैक्सीन मैत्री और स्वास्थ्य कूटनीति

कोविड–19 महामारी के दौरान भारत की विदेश नीति में स्वास्थ्य कूटनीति एक महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में सामने आई। इसी संदर्भ में जनवरी 2021 से भारत ने "वैक्सीन मैत्री" पहल की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत विभिन्न देशों को कोविड–19 टीकों की आपूर्ति की गई। यह पहल विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए महत्त्वपूर्ण रही, क्योंकि महामारी के समय अनेक विकासशील और छोटे देशों को टीकों की उपलब्धता, लागत और वितरण जैसी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। भारत ने इस स्थिति में अपने औषधि उत्पादन और टीका निर्माण क्षमता का उपयोग अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साधन के रूप में किया। सरकारी आँकड़ों के अनुसार भारत ने जनवरी 2021 से 99 देशों और दो संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं को 30.12 करोड़ से अधिक कोविड–19 टीकों की खुराक उपलब्ध कराई। इसमें 1. 51 करोड़ खुराकें 50 से अधिक देशों को अनुदान के रूप में दी गईं तथा 5.2 करोड़ खुराकें कोवैक्स व्यवस्था के माध्यम से भेजी गईं।

वैक्सीन मैत्री भारत की "फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड" की छवि को मजबूत करने वाली पहल सिद्ध हुई। भारत पहले से ही विश्व में कम लागत वाली दवाओं और टीकों का महत्त्वपूर्ण उत्पादक रहा है। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार भारत वैश्विक टीका उत्पादन में लगभग 60 प्रतिशत योगदान देता है और मात्रा के आधार पर जेनेरिक दवाओं की वैश्विक आपूर्ति में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस पृष्ठभूमि में वैक्सीन मैत्री ने भारत की मानवीय, उत्तरदायी और सहयोगी विदेश नीति को स्पष्ट किया। इस पहल ने यह संदेश दिया कि भारत संकट के समय केवल अपने राष्ट्रीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विकासशील देशों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को भी महत्त्व देता है। यद्यपि घरेलू कोविड–19 लहर के समय भारत को अपने टीका निर्यात में अस्थायी सावधानी बरतनी पड़ी, फिर भी वैक्सीन मैत्री ने वैश्विक दक्षिण में भारत की विश्वसनीयता बढ़ाई। इस प्रकार वैक्सीन मैत्री मोदी युग की भारतीय विदेश नीति में स्वास्थ्य सुरक्षा, मानवीय सहायता और दक्षिण–दक्षिण सहयोग का प्रभावी उदाहरण है।

जलवायु न्याय और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन

जलवायु परिवर्तन वैश्विक दक्षिण के लिए एक बड़ा संकट है, क्योंकि विकासशील देश कम ऐतिहासिक उत्सर्जन के बावजूद जलवायु आपदाओं का अधिक प्रभाव झेलते हैं। मोदी युग

में भारत ने जलवायु न्याय, सतत् विकास और स्वच्छ ऊर्जा को विदेश नीति का महत्त्वपूर्ण भाग बनाया। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन भारत और फ्रांस की संयुक्त पहल के रूप में 2015 में पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान शुरू हुआ। यह संगठन सौर ऊर्जा के विस्तार, ऊर्जा सुरक्षा और सतत् विकास को बढ़ावा देता है। 2025 तक इसके 125 सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देश बताए गए। यह पहल वैश्विक दक्षिण के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अनेक विकासशील देशों में सौर ऊर्जा की भारी संभावना है, लेकिन वित्त, तकनीक और क्षमता की कमी के कारण वे उसका पूरा उपयोग नहीं कर पाते।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और तकनीकी नेतृत्व

मोदी युग में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना भारतीय विदेश नीति और विकास साझेदारी का एक नया तथा महत्त्वपूर्ण आयाम बनकर सामने आई है। डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना से आशय उन डिजिटल व्यवस्थाओं से है, जिनके माध्यम से पहचान, भुगतान, दस्तावेज, स्वास्थ्य सेवा, शासन और वित्तीय समावेशन को व्यापक स्तर पर नागरिकों तक पहुँचाया जाता है। भारत ने आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर और कोविन जैसे डिजिटल मंचों के माध्यम से यह दिखाया कि तकनीक का उपयोग केवल निजी लाभ के लिए नहीं, बल्कि सार्वजनिक सेवा, पारदर्शिता और समावेशी विकास के लिए भी किया जा सकता है।

भारत की डिजिटल व्यवस्था का आधार व्यापक जन–भागीदारी है। उपलब्ध आधिकारिक जानकारी के अनुसार 16 सितंबर 2025 तक भारत में 142.76 करोड़ आधार संख्याएँ जारी की जा चुकी थीं। इसी प्रकार यूपीआई ने डिजिटल भुगतान को अत्यंत व्यापक बनाया है। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम के आँकड़ों के अनुसार जून 2026 में यूपीआई से 22,716.07 मिलियन लेन–देन हुए, जिनका कुल मूल्य 28,92,138.67 करोड़ रुपये रहा। डिजिलॉकर भी डिजिटल शासन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, इसके आधिकारिक पोर्टल के अनुसार इसके 70 करोड़ से अधिक पंजीकृत उपयोगकर्ता और 900 करोड़ से अधिक जारी दस्तावेज हैं। भारत ने इन अनुभवों को वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए उपयोगी मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है। 2023 में भारत की जी–20 अध्यक्षता के दौरान डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना को विकास एजेंडा के केंद्र में रखा गया। भारत ने ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रिपॉजिटरी को एक ज्ञान–मंच के रूप में प्रस्तुत किया, ताकि विभिन्न देश भारत सहित अन्य देशों के अनुभवों से सीख सकें। इस प्रकार डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के माध्यम से भारत ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि विकास केवल पूँजी, सैन्य शक्ति या प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि समावेशी तकनीक, डिजिटल पहचान, वित्तीय समावेशन और कुशल सेवा–प्रदाय भी विकास के प्रभावी साधन हो सकते हैं। वैश्विक दक्षिण के लिए भारत का यह मॉडल कम लागत, बड़े पैमाने और जन–हितकारी तकनीक पर आधारित है।

भारतीय महासागर, सागर नीति और समुद्री भूमिका

भारतीय महासागर क्षेत्र भारत की विदेश नीति, सामरिक सुरक्षा और वैश्विक दक्षिण में उसकी भूमिका की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत की भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर के

मध्यवर्ती क्षेत्र में है, इसलिए समुद्री व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति, नौवहन मार्गों की सुरक्षा और पड़ोसी द्वीपीय देशों के साथ संबंध भारत के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं। भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार और ऊर्जा आयात समुद्री मार्गों से होता है। इसलिए हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता, शांति और सुरक्षित समुद्री मार्ग भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक विकास दोनों से सीधे जुड़े हुए हैं। मोदी युग में भारतीय महासागर क्षेत्र को विदेश नीति में विशेष प्राथमिकता दी गई। वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मॉरीशस में "सागर" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका पूरा अर्थ है – "क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास"। इस नीति का उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ सुरक्षा सहयोग, समुद्री निगरानी, क्षमता निर्माण, आपदा राहत, संपर्क और विकास साझेदारी को बढ़ावा देना है। सागर नीति के अंतर्गत भारत ने मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स, श्रीलंका और अन्य समुद्री पड़ोसियों के साथ सहयोग को मजबूत किया। भारत ने इन देशों को समुद्री सुरक्षा उपकरण, प्रशिक्षण, तटीय निगरानी व्यवस्था, मानवीय सहायता और आपदा राहत के क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया।

सागर नीति का मुख्य संदेश यह है कि भारत हिंद महासागर में प्रभुत्ववादी शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सहयोगी, सुरक्षा–प्रदाता और विकास साझेदार के रूप में कार्य करना चाहता है। छोटे द्वीपीय देशों के लिए समुद्री सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, समुद्री आपदाएँ, अवैध मछली पकड़ना, समुद्री डकैती और आपदा राहत जैसे विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। भारत इन मुद्दों पर सहयोग देकर वैश्विक दक्षिण के समुद्री देशों के साथ अपनी विश्वसनीयता बढ़ाता है। इस प्रकार सागर नीति मोदी युग की भारतीय विदेश नीति का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है, जो सुरक्षा, विकास और क्षेत्रीय सहयोग को एक साथ जोड़ती है।

उपलब्धियाँ

मोदी युग में भारतीय विदेश नीति की उपलब्धियों को कई स्तरों पर समझा जा सकता है। इस काल में भारत ने वैश्विक दक्षिण की आवाज को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। विशेष रूप से जी–20 अध्यक्षता के दौरान भारत ने विकासशील देशों की समस्याओं, जैसे ऋण–संकट, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा संकट, जलवायु न्याय और बहुपक्षीय संस्थाओं में प्रतिनिधित्व की कमी को प्रमुखता दी। अफ्रीकी संघ को जी–20 का स्थायी सदस्य बनवाना भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक उपलब्धियों में से एक माना जा सकता है, क्योंकि इससे वैश्विक आर्थिक शासन में अफ्रीका की आवाज को संस्थागत पहचान मिली। इसी प्रकार भारत ने विकास साझेदारी को अपनी विदेश नीति का महत्त्वपूर्ण आधार बनाया। ऋण–रेखाओं, आईटेक प्रशिक्षण, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, स्वास्थ्य सहयोग, वैक्सीन मैत्री और सौर ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में भारत की पहल वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए व्यावहारिक रूप से उपयोगी सिद्ध हुई। भारत ने बहुपक्षीय मंचों पर सुधार की मांग को भी लगातार मजबूती से उठाया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य वैश्विक वित्तीय संस्थाओं में विकासशील देशों के अधिक प्रतिनिधित्व की मांग भारत की विदेश नीति का महत्त्वपूर्ण पक्ष रही है। इसके अतिरिक्त भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" को अपनी

विदेश नीति की नैतिक आधारभूमि के रूप में प्रस्तुत किया। इससे भारत की छवि एक ऐसी शक्ति के रूप में बनी, जो अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक उत्तरदायित्व, सहयोग और साझा विकास को भी महत्त्व देती है।

चुनौतियाँ

मोदी युग की भारतीय विदेश नीति की उपलब्धियों के बावजूद इसके सामने अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे पहली चुनौती चीन की बढ़ती शक्ति और दक्षिण एशिया तथा हिंद महासागर क्षेत्र में उसके विस्तार से जुड़ी है। भारत के पड़ोसी देशों में चीन का बढ़ता निवेश, आधारभूत संरचना परियोजनाएँ और सामरिक उपस्थिति भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा तथा प्रभाव के लिए निरंतर चुनौती बनी हुई है। दूसरी चुनौती वैश्विक दक्षिण की विविधता से संबंधित है। वैश्विक दक्षिण कोई एकसमान समूह नहीं है; इसमें अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और प्रशांत क्षेत्र के ऐसे देश शामिल हैं जिनकी आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ अलग–अलग हैं। इसलिए भारत के लिए सभी देशों की अपेक्षाओं को समान रूप से पूरा करना सरल नहीं है। तीसरी चुनौती संसाधनों की सीमित उपलब्धता है। भारत विकास साझेदारी, तकनीकी सहायता और ऋण–रेखाएँ उपलब्ध कराता है, लेकिन चीन की बेल्ट एंड रोड पहल की तुलना में भारत की वित्तीय क्षमता अपेक्षाकृत सीमित है। इस कारण बड़े पैमाने पर आधारभूत संरचना वित्त उपलब्ध कराना भारत के लिए कठिन बना रहता है। चौथी चुनौती भारत की घरेलू स्थिति से जुड़ी है। वैश्विक नेतृत्व की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए आर्थिक विकास, सामाजिक सद्भाव, लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती, मानव विकास सूचकांकों में सुधार और समावेशी विकास अत्यंत आवश्यक हैं। अतः भारत को बाहरी नेतृत्व के साथ–साथ आंतरिक सुदृढ़ता पर भी निरंतर ध्यान देना होगा।

निष्कर्ष

2014 से वर्तमान तक मोदी युग में भारतीय विदेश नीति अधिक सक्रिय, बहुआयामी और नेतृत्वकारी रूप में सामने आई है। भारत ने पारंपरिक सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने का प्रयास किया। जी–20 अध्यक्षता, अफ्रीकी संघ की सदस्यता, वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट, वैक्सीन मैत्री, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, आईटेक और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना जैसे प्रयासों से भारत ने विकासशील विश्व में अपनी भूमिका को मजबूत किया। फिर भी भारत की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह अपने घोषणात्मक नेतृत्व को ठोस परियोजनाओं, वित्तीय सहयोग, तकनीकी साझेदारी और संस्थागत परिणामों में कितना बदल पाता है। वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका केवल नैतिक नेतृत्व की नहीं, बल्कि व्यावहारिक सहयोग की भी है। यदि भारत विकास, तकनीक, जलवायु न्याय और बहुपक्षीय सुधारों के क्षेत्र में निरंतरता बनाए रखता है, तो आने वाले समय में वह वैश्विक दक्षिण का एक विश्वसनीय प्रतिनिधि और वैश्विक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण निर्माता बन सकता है।

संदर्भ सूचीः–

1. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2015). एक्ट ईस्ट नीति. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार।
2. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2023). ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रिपॉजिटरी और वैश्विक दक्षिण के लिए सामाजिक प्रभाव कोष. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार।
3. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2025). भारत की वैश्विक उपस्थिति और जी–20 अध्यक्षता. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार।
4. मोहन, सी. राजा। (2015). मोदीज वर्ल्डः एक्सपैंडिंग इंडियाज स्फीयर ऑफ इन्फ्लुएंस. हार्पर कॉलिन्स।
5. मोहन, सी. राजा। (2019). मोदी के अंतर्गत विदेश नीतिः आकांक्षा और उपलब्धि के बीच। ए. पी. चटर्जी, टी. बी. हैनसेन और सी. जाफ्रेलोट (संपा.), मेजरिटेरियन स्टेटः हाउ हिंदू नेशनलिज्म इज चेंजिंग इंडिया में. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. मालोन, डी. एम., मोहन, सी. राजा, और राघवन, एस. (संपा.). (2015). भारतीय विदेश नीति का ऑक्सफोर्ड हैंडबुक. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2015). प्रधानमंत्री का मॉरीशस में ओ.पी.वी. बैराकुडा के कमीशनिंग समारोह में वक्तव्य. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
8. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2023). प्रथम वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट, 2023. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
9. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2023). जी–20 नई दिल्ली नेताओं की घोषणा. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
10. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2026). विकास परियोजनाओं के लिए भारत की ऋण–रेखाएँ. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
11. हॉल, आई. (2016). नरेन्द्र मोदी के अंतर्गत भारतीय विदेश नीति और बहु–संरेखण. द राउंड टेबलः द कॉमनवेल्थ जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 105(3), 271–286.
12. हॉल, आई. (2017). नरेन्द्र मोदी और भारत की मानक शक्ति. इंटरनेशनल अफेयर्स, 93(1), 113–131.
13. हॉल, आई. (2019). मोदी और भारतीय विदेश नीति का पुनर्निर्माण. ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. पंत, एच. वी. (2016). भारतीय विदेश नीतिः एक अवलोकन. मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. पंत, एच. वी. (2019). भारतीय विदेश नीतिः मोदी युग. हर–आनंद पब्लिकेशन्स।
16. पंत, एच. वी. (संपा.). (2019). भारत की विदेश नीति में नई दिशाएँ. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।